20 दो लघु-कथाएँ

संकलित

बलाईचाँद मुखोपाध्याय 'बनफूल'

(जन्म : सन् 1899, मृत्यु : सन् 1979)

बंगाली के प्रसिद्ध लेखक बलाईचाँद मुखोपाध्याय की शिक्षा पटना विश्वविद्यालय और कलकत्ता मेडिकल कॉलेज से हुई। वे एक अच्छे कवि, फिल्म राइटर एवं फिजीशियन थे। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं पर काम किया। कई नाटको में अभिनय भी किया। 'भुवन सोम', 'होते बाज़ारे' एवं व 'अर्जुन पंडित' जैसी फिल्मों का लेखन-कार्य किया उनको फिल्मफेयर एवोर्ड भी मिला। उनको विभिन्न राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया।

यहाँ संकलित लघु-कथा 'बनफूल' की कहानियाँ में से लिया गया है। संकलित 'फर्क' लघु-कथा में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद बार-बार होने वाले दंगों की मानसिकता और हिन्दू और मुस्लिम दोनों संप्रदायों में माननेवाले लोगों के मन में उत्पन्न अविश्वास और आशंका को रेखांकित किया गया है। मनुष्य ही हर प्रकार के भेद-भाव को मानता हैं जब कि पशु और पक्षी सोच नहीं सकते अत: उनके लिए किसी देश की कोई सीमारेखा नहीं होती।

'आत्ममंथन' एक बेहद मार्मिक लघु-कथा है जो पाठक की संवेदना को झकझोर कर उसे सोचने के लिए बाध्य करती है। हम पशुओं और पक्षियों को ही नहीं दूसरे मनुष्यों की पीड़ा की बहुत महत्व नहीं देते। किन्तु जब हम स्वयं उस पीड़ा का अनुभव करते हैं। तब हमें सच्चाई का अहसास होता है। इस लघु-कथा में पक्षी के चूज़े की मृत्यु के पश्चात् पक्षियों का आर्तनाद कितना हृदयविदारक है इसका पता अपने बेटे के मृत्यु के पश्चात् कथानायक को चलता है।

फ़र्क

उस दिन उनके मन में इच्छा हुई कि भारत और पाक के बीच की सीमारेखा को देखा जाए। जो कभी एक देश था, वह अब दो होकर कैसा लगता है। दोनों देश एक-दूसरे के प्रति शंकालु थे। दोनों ओर पहरा था। बीच में कुछ भूमि होती है जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता। दोनों उस पर खड़े हो सकते हैं। वह वहीं खड़ा था। लेकिन अकेला नहीं था – पत्नी थी और थे अठारह सशस्त्र सैनिक और उनका कमांडर भी। दूसरे के सैनिकों के सामने वे उसे अकेला कैसे छोड़ सकते थे।

इतना ही नहीं, कमांडर के उसके कान में कहा, ''उधर के सैनिक आपको चाय के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं। पता नहीं क्या हो जाए! आपकी पत्नी साथ में हैं और फिर कल हमने उनके तस्कर मार डाले थे।''

उसने उत्तर दिया, ''जी नहीं, मैं उधर कैसे जा सकता हूँ ?''

और मन-ही-मन कहा, ''मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं ? मैं इनसान हूँ, अपने-पराए में भेद करना मैं जानता हूँ। इतना विवेक मुझमें है।''

वह यह सब सोच ही रहा था कि सचमुच उधर के सैनिक वहाँ आ पहुँचे। रोबीले पठान थे। बड़े तपाक से हाथ मिलाया। उस दिन ईद थी। उसने उन्हें मुबारकबाद दी। बड़ी गरमजोशी के साथ एक बार फिर हाथ मिलाकर वे बोले, ''इधर तशरीफ़ लाईए। हम लोगों के साथ एक प्याला चाय पीजिए।''

इसका उत्तर उसके पास तैयार था। अत्यंत विनम्रता से मुसकराकर उसने कहा, ''बहुत-बहुत शक्रिया। बड़ी खुशी होती आपके साथ बैठकर लेकिन मुझे आज ही वापस लौटना है और वक्त बहुत कम है। आज तो माफ़ी चाहता हूँ।''

इसी प्रकार शिष्टाचार की कुछ और बातें हुईं कि पाकिस्तान की ओर से कुलाँचे भरता हुआ बकरियों का एक दल उसके पास से गुज़रा और भारत की सीमा में दाखिल हो गया। एक साथ सबने उनकी ओर देखा। एक क्षण बाद उसने पूछा, ''ये आपकी हैं ?''

उनमें एक सैनिक ने गहरी मुसकराहट के साथ उत्तर दिया, ''जी हाँ जनाब! हमारी हैं। जानवर हैं, फ़र्क करना नहीं जानते।''

परिंदे हमसे बेहतर हैं, जो आपस में नहीं लड़ते

कभी मंदिर पै जा बैठे, कभी मस्ज़िद पै जा बैठे।

आत्म-मंथन

सारे दिन मेहनत कर, दोपहर को दक्षिण ओर के बारामदे में बिस्तर बिछाकर लेटा था। ज्यों ही नींद आई... तभी एक चीज़ मुंह पर थप से आ गिरी। जल्दी से उठ बैठा। देखा एक बदसूरत कुत्सित पक्षी का चूजा। न बाल, न पर... अत्यंत ही विभत्स। मैंने क्रोध और घृणा से उठाकर उसे सामने आंगन में फेंक दिया। पास ही एक बिल्ली मानो इसी क्षण की इंतजारी में घात लगाए बैठी थी। उसने झपटकर बच्चे को उठाया और भागी। मैनों का झुंड आर्तनाद करने लगा। पक्षियों का हाहाकार देर तक सुनाई पड़ता रहा। थोड़ी देर तक करवटें बदलने के बाद में सो गया।

चाप पांच साल बीत गए।

अचानक एक दिन हमारा इकलौता, आँखों का तारा, हमरा बेटा सचिन सांप के काटने से मर गया। डॉक्टर, वैद्य, ओझा कोई भी उसे बचा न सका। हमेशा-हमेशा के लिए हमें छोड़कर सचिन चला गया।

घर में रोना - पीटना शुरू हो गया। मेरी पत्नी भीतर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। कुछ महिलाएं उन्हें संभालने मे लग गई बाहर आया तो देखा बच्चे को ले जाने की तैयारी हो रही थी। हाहाकार मचा हुआ था।

उसी वक्त मुझे बहुत दिनों बाद, न जाने क्यों, उसी चिड़िया के बच्चे का ध्यान आया।

उसी चार-पांच साल पहले, निस्तब्ध दोपहर में, बिल्ली के मुंह में असहाय पक्षी का छौना और उसके चारों और चीखती-चिल्लाती पक्षी माता तथा अन्य पक्षियों का झुंड।

सहसा एक अनकहे इशारे ने मुझे भीतर तक हिला दिया।

शब्दार्थ-टिप्पणी

तस्कर चोर **मुबारकबाद** बधाई **तशरीफ** इज्जत, महत्व **गरमजोश** जोश में, ऊष्मा से **बदसूरत** कुरूप, बेडौल **चूजा** पक्षी का बच्चा **घृणा** नफ़रत **धात** प्रहार, वध **आर्तनाद** रोना, **निस्तब्ध** जड़वत, संपूर्ण शांत,

मुहावरे

कुलाँचे भरना चौकड़ी मारना **आँखों का तारा** बहुत प्रिय होना, **मूर्छित होकर गिरना** बेहोश होकर गिरना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित दिए गए विकल्पो में से सही विकल्पों चुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कौन-से त्यौंहार के दिन कथा-नायक भारत-पाकिस्तान सीमारेखा देखने के लिए गए ?

(क) मोहरम (ख) रमजान (ग) ईद (घ) बकरीद

(2) कथा-नायक किसके साथ भारत और पाक के बीच की सीमारेखा देखने गया था ?

(क) परिवार (ख) पत्नी (ग) बहन (घ) मित्रों

(3) पाकिस्तान की ओर से भारत की सीमा में किसका दल घुस आया ?

(क) गायों का दल (ख) बकरियों का दल (ग) घोड़ों का दल (घ) खच्चरों का दल

(4) पठान सैनिक देखने में कैसे थे ?

(क) रोबीले (ख) रसीले (ग) मृदु (घ) जोशीले

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) पठान सैनिकों ने कथा-नायक के साथ कैसा बर्ताव किया ?

(2) नींद में लेखक के मुँह पर क्या गिरा ?

(3) कथा नायक के बेटे की मृत्यु कैसे हुई थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो -दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) भारत-पाक एक दूसरे के प्रति शंकालु क्यों थे ?

(2) भारतीय कमांडर ने कथा-नायक के कान में क्या कहा ?

(3) मैनों का झुण्ड क्यों आर्तनाद करने लगा ?

(4) कथा-नायक की पत्नी मूर्छित होकर क्यों गिर पड़ी ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः पंक्तियों में उत्तर दीजिए :

(1) पाकिस्तान पठान सैनिक के निमंत्रण को सुनकर कथा-नायक ने क्या कहा ?

(2) मनुष्य की अपेक्षा परिंदे क्यों बेहतर होते हैं ?

(3) कथा-नायक को किस पीड़ा ने भीतर तक झकझोर दिया ?

* **आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) जी हाँ जनाब ! हमारी हैं । जानवर हैं, फ़र्क करना नहीं जानते ।

(2) मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं ? मैं इनसान हूँ, अपने-पराए में भेद करना मैं जानता हूँ । इतना विवेक मुझमें है ।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राष्ट्रीय एकता के प्रसंग प्राप्त कर पढ़े ।
- राष्ट्रीय एकता विषय पर एक लघु निबंध लिखें ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- यशपाल कृत 'झूठा-सच' उपन्यास पढ़कर बच्चों के बीच राष्ट्रीय एकता पर चर्चा करें ।
- किसी अविस्मरणीय घटना का वर्णन छात्रों से सुने ।

●